कुमार जीवन - 2

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ हरेक सेवाकेन्द्र से यह समाचार आना चाहिए - "यह कुमार तो अवतरित होकर के इस पृथ्वी पर पधारे हैं।" ऐसा समाचार जब आये तब समझो कि फल निकल रहा है। अभी स्थिति की आवश्यकता है। जैसे बापदादा लोन लेकर आते हैं ना। अभी तो दोनों ही लोन लेते हैं। थोड़े समय के लिये आते हैं। किस लिए? मिलने के लिये। वैसे ही आप सभी भी समझो कि हम लोन लेकर सर्विस के निमित्त आये हैं - थोड़े समय के लिये। जब ऐसी स्थिति होगी तब बाप का प्रभाव दुनिया के सामने आयेगा।

➳ _ ➳ दोनों ही हिसाब ठीक किया है? या लेने का किया है, देने का नहीं? 6 मास तक एकरस रहेंगे ना। कि 15 दिन के बाद लिखेंगे-चाहते तो हैं लेकिन क्या करें, यह हो गया...ऐसी कोई भी कम्पलेन नहीं आये। फिर तो दीदी का काम हल्का हो जायेगा। आप खुद भारी होंगे तो सारा कार्य भारी हो जायेगा।

➳ _ ➳ बापदादा की आशा कहें वा शुद्ध संकल्प कहें यही रहता है और रहेगा ही कि एक-एक नम्बरवन हो। लेकिन सारे कल्प के अन्दर जो अब की स्थिति बनायेंगे वह तो अब के हिसाब से नम्बरवन है ना, जो वास्तविक सम्पूर्ण स्टेज है। इसके लिये कह रहे हैं। सभी यही लक्ष्य रखें कि हम नम्बरवन जायेंगे। यह नहीं सोचना कि सभी कैसे नम्बरवन जोयेंगे? इसमें महादानी नहीं बनना है।

➳ _ ➳ दो बातें मुख्य याद रखना है कि एक तो मणी को देखना, देह रूपी सांप को न देखना। और दूसरी बात, अपने को अवतरित समझो। इस शरीर में अवतरित होकर कार्य करना है।

➢➢ स्वयं को अवतार समझना अर्थात क्या ?

➳ _ ➳ जो यहाँ है नहीं... हो ऊपर से आता है

→ जैसे भगवान अवतरित होते हैं

- जो भगवान के कर्तव्य... वही हमारे कर्तव्य...

➳ _ ➳ **अवतार हमेशा Awakened और Enlightened State में रहता है**

→ वह कभी भी सोया हुआ नहीं रहता

- उसे निरंतर अपनी ज़िम्मेवारियों / लक्ष्य की स्मृति रहती है

➳ _ ➳ अवतार के जन्म की विधि भी बहुत दिव्य होती है

→ उसके हर कर्म दिव्य होते हैं

➳ _ ➳ कभी विघनो को देखकर दुखी नहीं होता

→ जैसे कृषण कभी कंस के विघनो से दुखी नहीं होता

➳ _ ➳ निरंतर आनंदमई स्थिति रहती है

➳ _ ➳ जब जाने का समय आता है तो पीछे मुड़कर नहीं देखता है... किसी को याद नहीं करता है

→ जैस कृषण ने जाते हुए गोकुल की और पीछे मुड़कर नहीं देखा

➳ _ ➳ सम्पूरण नष्टोमोहा

→ इस संसार का कोई आकर्षण उसे आकर्षित नहीं कर सकता

➳ _ ➳ लोकलाज की कभी परवाह नहीं करता